अतिशय क्षेत्र

श्री राजगिरि जी

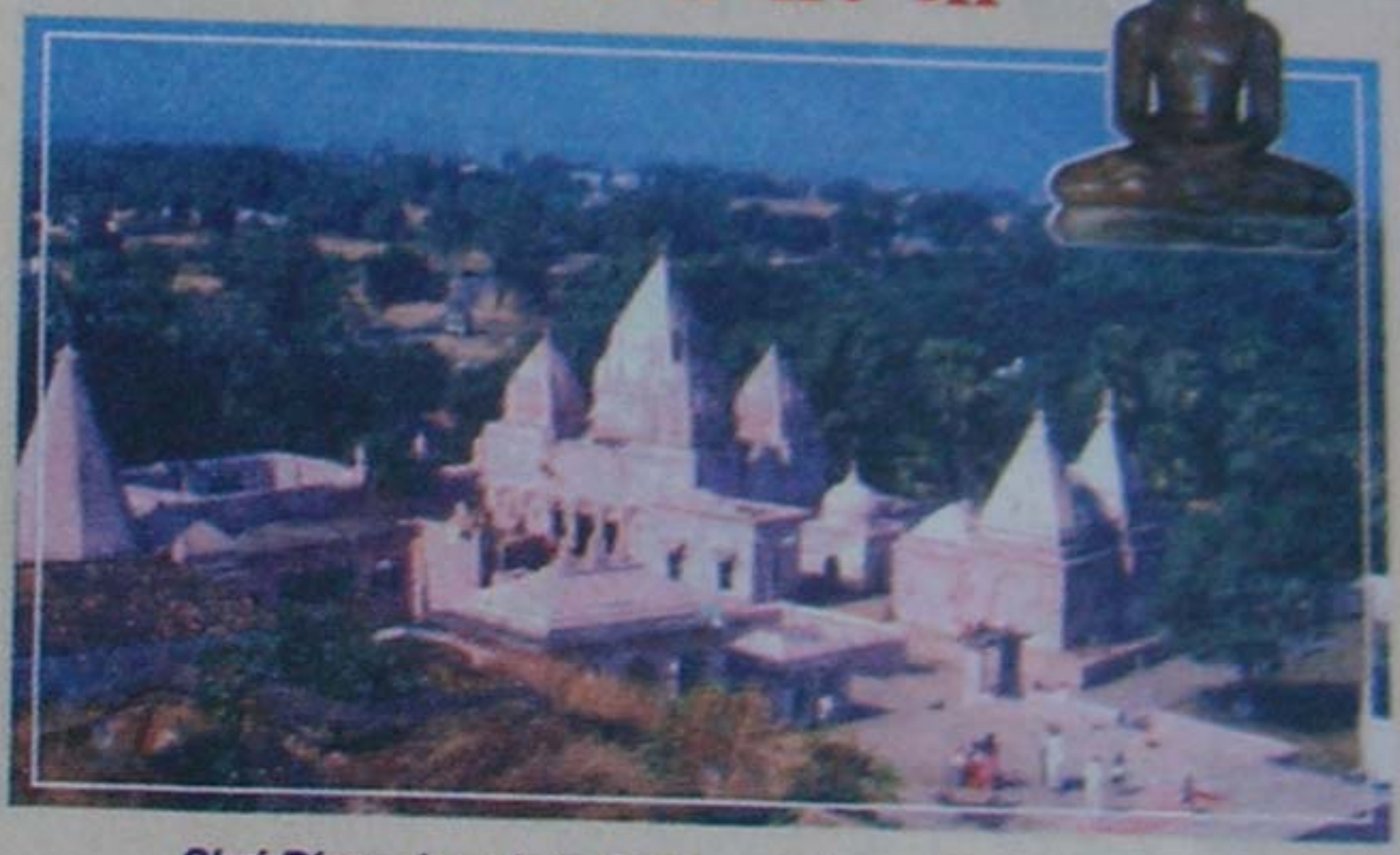

Shri Digamber Jain Atishay Kshetra Rajgihi, Bihar.

अर्घ

वसु द्रव्य मिलाये भविमन भाये, प्रभु गुण गाये नृत्य करो।
भव भव दुखनाशा, शिममग भासा, चित्त हुलासा सुक्ख करो॥
श्री पंचमहागिरि तिन पर मन्दिर शोभित सुन्दर सुखकारी।
जिन बिम्ब सुदर्शत आनन्द बरसत जन्म मृत्यु भम दुखहारी॥

ॐ ह्रीं श्री राजगृही क्षेत्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।